फितनो के ज़माने में तन्हाई को पसन्द करे

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

तन्हाई में रहने का मुस्तहब होना

ज़िन्दगी गुजरने के दो तरीके है और दोनों अलग अलग है एक तरीका तो ये है के आदमी लोगो के दरमियान रिश्तेदारो पडोसियों दोस्तों आबादी और समाज़ में रहकर सब के साथ मिलजुल कर ज़िन्दगी गुज़ारे और दूसरा तरीका तन्हाई का है यानि आदमी तन्हाई इख्तियार करे समाज़ और आबादी से अलग ऐसी जगह रहे जहा किसी से कोई वास्ता न पडता हो लेन-देन और कोई मामला करने की जरूरत न पेश आये इस तरह ज़िन्दगी गुजारे.

इस्लाम ने रहबानीयत की इजाज़त नहीं दी है रहबानीयत का मतलब ये है के आदमी लोगो से कटकर पहाडो की गुफा में जा कर अल्लाह की इबादत के लिये तकलीफ बरदाश्त कर तने तनहा अकेला रहे जिस को (ब्रह्मचारिया) कहा जाता है इस्लाम आने से

पहले बनु इसराइल के अन्दर बाज़ लोग अक्सर अल्लाह की खुशी और अल्लाह को राज़ी करने के लिये ये तरीका इख्तियार करते थे जिस के मुताल्लिक कुरान में है 'ये रहबानीयत जिसे उन्होंने बनाया है'.

अल्लाह इरशाद फरमाते है हमने ये तरीका उनपर जरूरी नहीं किया था बल्कि ये चीज़ उन्होंने अपने तौर पर ये समज़ते हुवे बनाया के ये करके हम अल्लाह को राज़ी और खुश कर लेन्गे इसलीये के जो चीज़ अल्लाह की तरफ से जरूरी नहीं की गयी थी बल्कि उन्होंने अपने तौर पर इख्तियार की थी उसका यही नतीजा होना था इस्लाम रहबानीयत की इजाज़त नहीं देता.

इसलीये अल्लाह ने नबियो को समाज़ में भेजा जहा लोगो की जमाते एक साथ मिलकर ज़िन्दगी गुजारती है और वो इन्ही में काम करते है इन्सान पैदाइशी तौर पर ऐसा ही बनाया गया है की वो लोगो में रेहकार ज़िन्दगी गुज़ारे और पैदाइशी तौर पर वो अपने साथ कुछ ताल्लुकात और रिश्तेदारिया लेकर दुनिया में आता है इसलीये असल तो ये है के आदमी समाज़ में

रहकर ज़िन्दगी गुज़ारे.

हदीस में है के हुजूर ﷺ का इरशाद है वो आदमी जो लोगो के अन्दर मिलजुल कर रहता है और उनकी तरफ से पोहचायी जाने वाली तकलीफो पर सबर से काम लेता है वो उससे बेहतर है जो लोगो से अलग रहता है और उनकी तकलीफो पर सबर नहीं करता. (तिर्मिज़ी २५०७)

तनहाई मुस्तहब होने की तीन शकले

अगर आम हालत है, के लोगो के साथ मेलजोल, समाज़ और आबादी में रहने की शकल में दीन के मुताल्लिक किसी नुकसान या हराम में पडने का कोई डर नहीं है तो कौन सी शकल अच्छी है लोगो के साथ मिलजुल कर रहना या तन्हाई इख्तियार करना.

इसलीये अल्लामा नवविؒ इस बाब (चैप्टर) में इसी को बयां करते है.

१. अगर ज़माने वालो में बिगड आ गया हो तो तन्हाई मुस्तहब है.

२. या अपने दीन में किसी नुकसान या किसी फितने

में पड-जाने का खतरा हो तो इस शकल में भी तन्हाई मुस्तहब है.

३. या समाज़ और आबादी में ज़िन्दगी गुजारने में डर है के हम हराम कामो में मुब्तला हो जायेंगे, किसी भी तरह का हराम हो, सिर्फ ज़िनाकारी और शराब पीना ही नहीं, बल्कि लोगो के हक बरबाद होने, बोहतान, गीबत और उनके मुताल्लिक बुरे ख्याल में मुब्तला होने की सम्भावना है और पक्का यकीन हो तो इस शकल में भी तन्हाई मुस्तहब है.

इस सिलसिले में इन्होने इस आयत से दलील दी है की अल्लाह का इरशाद है तरजुमा- 'अल्लाह की तरफ दौड लगाओ' यानी सब से हटकर सिर्फ अल्लाह की तरफ ध्यान करो और हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم से फरमाया गया 'आप कह दिज्ये में तुम लोगो को अल्लाह की तरफ से खुल्लम खुल्ला डराने के लिये आया हूं'.

फितने के ज़माने में तन्हाई को पहला दर्ज़ा दिया है

जहा लोग मिलजुल कर रहते है वह दो तरह के हालत होते है एक तो फितने के हालत होते है मसलन फितना

फेल गया के आदमी को अपने आप को गुनाहो और उनकी तरफ ले जाने वाले सामन से बचना मुश्किल हो गया तो ऐसे फितने और आजमाइश के ज़माने में तन्हाई को पहला दर्जा दिया गया है और इसीको पसन्द किया गया है.

खास तौर पर अगर लोगो के साथ मिलजुल कर रहने में आदमी को अपने दीन के खराब होने का दर हो के उनकी तरफ से जो हालत पेश आएंगे उनपर सब्र नहीं कर सकेगा और उनके हुकूक में कमी होगी और हो सकता है के उसपर ज़ियादती हो जाये और उसके हुकूक में नुकसान हो गीबत और बोहतान में मुब्तला हो जाये अपना हल और मिजाज़ देखकर और लोगो के हालत देखकर इसको ये पक्का ख्याल हो और अपने दीन के अन्दर फितना नुकसान और हराम या शक में पडने का दर और ख्याल है तो तन्हाई में रहना मुस्तहब और पसंदीदा है इस पर सब उलमा का इत्तिफाक है इस हालत में अपने दीन की हिफाजत के लिए आदमी पर जरूरी है के लोगो से मेलजोल इख्तियार न करे.

हज़रत अबू सईद खुदरीؓ से रिवायत है एक आदमी ने **हुजूर**ﷺ से पुछा ऐ **अल्लाह** के **रसूल** कौन सा आदमी सबसे अच्छा और बेहतर है.

हुजूरﷺ ने फरमाया वो मुस्लमान जो अपने माल और जान से **अल्लाह** के रास्ते में जिहाद करता हो उसने पुछा फिर कौन?

हुजूरﷺ ने फरमाया वो आदमी जो किसी गुफा के अन्दर तन्हाई इख्तियार करके **अल्लाह** की इबादत में मशगूल हो जाये.

और एक रिवायत में है **अल्लाह** से डरता रहता हो गुनाहो से बचता हो और लोगो को अपना बुराई से बचता हो (यानि लोगो में रहने की हल में ये डर है के मेरे बुराई से लोगो को तकलीफ पोहचेगी इसलिये तन्हाई इख्तियार करता हो).

हज़रत अबू हुरैरहؓ से रिवायत है के **हुजूर**ﷺ ने इरशाद फरमाया लोगो में बेहतरीन ज़िन्दगी वाला वो आदमी है जो **अल्लाह** के रास्ते में अपने घोडे की लगाम पकडे हुवे उसकी पीठ पर उडा-चला जाता हो

जहा कही दुश्मन के हथयार या घबराहट की आवाज़ सुनता है और दुश्मन की तरफ से कोई खतरे की बात देखता है तो दौडा हुआ वह पोहच जाता है गोया मुकाबले की हालत में मौत को तलाश करता है.

या वो आदमी जो अपनी चन्द बकरिया लेकर पहाड की चोटियों पर या किसी वादी में जा कर रहता है नमाज़ कायम करता है ज़कात अदा करता है और अपने **रब** की इबादत में मशगूल रहता है यहाँ तक के उसकी मौत आजाये और लोगो को अपनी बुराई से महफ़ूज़ रखता हो और भलाई पोहचने की कोशिश करता है.

खुलासा ये हुआ के फितने के ज़माने में अगर अपने दीन के मुताल्लीक खतरा हो तो तन्हाई को पहला दर्ज़ा दिया है.

हवाला- हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से इस रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर करने की कोशिश की गयी है.